मिथिला अनलाईन . कम

मिथिलाक गौरवभूमि सिमरौनगढ

जनकवंश तथा लिच्छवी-प्रजातन्त्रक पतनक बाद मिथिला राजनीतिक रूपेँ शिथिल भऽ गेल । तहिना सांस्कृतिक दृष्टिसँ सेहो कतेको वर्षधरि मिथिला श्रीहीनरहल। मुदा कर्णाटवंशक उदयक सङ्गहि एकटा नवयुग आरम्भ भेल आ मिथिलाक सुषुप्तरहलगरिमा पुनः घुरि आएल । कर्णाट-कुलभूषण नान्यदेव सिमरौनगढ़केँ तिरहुत (मिथिला)क राजधानी बना एहि नवयुगक शुभारम्भ कएलनि । तकरा बादसँ सिमरौनगढ़ मिथिलाक प्रतिष्ठाक प्रतिनिधित्व करऽ लागल ।

वर्तमानमे सिमरौनगढ़ नेपालक बारा जिलाअन्तर्गत पड़ैत अछि । बाराक मुख्यालय कलैयासँ करीब २२ किलोमीटर दक्षिण-पूर्वमे ई अवस्थित अछि । एकर नामकरण कोना भेल से एखनधरि अनुसन्धानक विषय अछि । किछुगोटे सिमरक वन-क्षेत्रमे बसल ई नगर ‘सिमर-वन-गढ़’सँ अपभ्रंशित होइत सिमरौनगढ़ भेल होएबाक विश्वास रखैत छथि । एहिना किछुगोटेक कहब छनि जे राजा शिवसिंह (हरिसिंह देवक दोसर नाम)क रमण करऽवला गढ़क रूपमेरहलई स्थान ‘शिव-रमण-गढ़’सँ अपभ्रंशित भऽ सिमरौनगढ़ बनल । नाम जेना-जे पड़ल हो, मुदा पूर्वमध्यकालीन मिथिलाक चौदह कोसीय राजधानीक रूपमे प्रख्यात सिमरौनगढ़ कर्णाटवंशीय शासकसभक सत्कीर्तिक कारणे इतिहास-प्रसिद्ध अछि, ताहिमे कोनो दू मत नहि अछि ।

पराक्रमी चालुक्य-सम्राट विक्रमादित्य छठमक अवसानक बाद चालुक्य साम्राज्य कमजोर पड़ि गेल । एहि कमजोरीक लाभ उठा चालुक्यक प्रान्तीय सामन्त शासक नान्यदेव तिरहुतकेँ स्वतन्त्र राज्य घोषित कऽ राजपाट अपना हाथमे लेलनि । प्रकृतिद्वारा संरक्षित सिमरौनगढ़केँ ई.सन १०९७ मे स्वतन्त्र तिरहुत राज्यक राजधानी बनाओल गेल । नवस्थापित राजधानीकेँ भव्य सुरक्षा-चक्रव्यूहसँ सुरक्षित करबाक यथासम्भव प्रयास कएल गेल । अपन राजनीतिक सङ्गठन एवं कुशल प्रशासनिक व्यवस्थाक माध्यमसँ नान्यदेव मिथिलाक पुनर्निर्माण-अभियानकेँ गति देलनि । पचास वर्षक हिनक शासनमे सिमरौनगढ़क ख्याति चारूभर पसरऽ लागल ।

नान्यदेवक उत्तराधिकारीसभक शासनावधि एवं गतिविधिक प्रामाणिक आधार उपलब्ध नहि अछि । मुदा विभिन्न ग्रन्थक अध्ययन आ विश्लेषणसँ ई तथ्य बहराइछ जे नान्यदेवक बाद गाङ्गदेव, नरसिंह देव, रामसिंह देव, शक्तिसिंह देव, भूपालसिंह देव आ हरिसिंह देव मिथिलापर शासन कएलनि । एहि राजासभमे नान्यदेव आ रामसिंह देवक अभिलेख मात्र प्राप्त अछि । राजा रामसिंह देव (ई.सन १२२७–१२४१)क प्राप्त खण्डित अभिलेखमे मिथिलाक्षर तथा मैथिली भाषाक प्रयोग भेल अछि ।

इतिहास कर्णाट-राजासभकेँ राज्य-विस्तारक कारणे पराक्रमी मानैत अछि । पराक्रमी कहएबाक

लेल ई योग्यता ओहि समयमे आवश्यक छल । मुदा सिमरौनगढ़क सुयशक आधार कर्णाटवंशक सामरिक उपलब्धि नहि, अपितु सांस्कृतिक अवदान थिक । एहि अवदानक सर्वाधिक श्रेय अन्तिम कर्णाट राजा हरिसिंह देवकेँ जाइत अछि । हिनक रानी देवलदेवी आ मन्त्री चण्डेश्वरक योगदान सेहो उल्लेखनीय अछि ।

हरिसिंह देव (ई.सन १२८०–१३२६)क समयमे स्वाभिमानक रक्षा विकट काज छल । शक्तिशाली मुसलमान शासकसभक पसरैत सामरिक प्रभावसँ सम्पूर्ण आर्यावर्त आक्रान्त छल । मुदा हरिसिंह देव दिल्लीक सुल्तान फिरोज शाह तुगलकद्वारा पराजित भइयोकऽ झुकलाह नहि । बल्कि तत्कालीन युगधर्मक विपरीत टुटि गेलाह । ओ अपन सर्वस्व गुमाकऽ जे आदर्श स्थापित कएलनि से चिरस्मरणीय रहत । मिथिलाक माथपर सपूत हरिसिंह देवक सुनाम सदति चमकैत रहत । हुनकाद्वारा तत्कालीन दिग्भ्रमित मिथिलाकेँ स्पष्ट दिशा देबाक लेल कएल गेल प्रयत्नक प्रभाव एखनहु मिथिलामे विद्यमान अछि । सात सए वर्ष पूर्व स्थापित पञ्जि-प्रथा अपन गुण-दोषक सङ्ग एखनहु व्यापक, लोकप्रिय आ स्थायी रूपेँ प्रचलित अछि । हिनक सामाजिक व्यवस्थाक अनुकरण पाछाँ चलिकऽ नेपालक शासक जयस्थिति मल्ल कएलनि । ओहि व्यवस्थाक प्रभाव एखनहु नेवारी समाजमे देखल जा सकैत अछि । कला-साहित्यक क्षेत्रमे सेहो हिनक योगदान कम महंत्वपूर्ण नहि अछि ।

मुसलमान-आक्रमणसँ पराजित हरिसिंह देव आत्मसुरक्षाक लेल अपन रानी, मन्त्री आदिक सङ्ग उत्तरदिस प्रयाण कएलनि । किछु इतिहासकारक कहब छनि जे बाटहिमे हिनक देहावसान भऽ गेलनि आ रानी देवलदेवी तथा मन्त्री आदि नेपाल उपत्यकामे प्रवेश पौलनि । एहि सम्बन्धमे तथ्यक निरूपणहेतु विशेष अध्ययन-अनुसन्धानक आवश्यकता अछि । मुदा एतबाधरि निर्विवाद अछि जे हिनकालोकनिक उपत्यका-प्रवेशसँ राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिएँ नेपालमे नवयुगक शुभारम्भ भेल । तत्कालीन नेपालक कला, साहित्य, धर्म आदिक क्षेत्रमे मैथिल परम्पराक भरपूर प्रभाव देखल जाए लागल ।

सिमरौनगढ़सँ नेपाल उपत्यकामे पलायन कएनिहारि रानी देवलदेवी आ मन्त्री चण्डेश्वर ओहिठामक राजनीति आ राज्य-सत्तापर पूर्ण प्रभाव कायम कएलनि । एहि तथ्यक पुष्टिमे नेपाल संवत ४७३ क नित्यान्हिकतिलक नामक ग्रन्थ-पुष्पिकामे देवलदेवीक नाम प्रयुक्त प्रशस्ति श्री श्री राजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक राजाभिभावति श्री देवल देव्या विजय राज्येकेँ प्रमाण मानल जा सकैत अछि । ओना मन्त्री चण्डेश्वरद्वारा लिखित कृत्य चिन्तामणि नामक ग्रन्थसँ ई सङ्केत भेटैत अछि जे ओ नेपालपर विजय कएने छलाह । यद्यपि ई प्रसङ्ग इतिहासक पन्नामे विवादक विषय बनल अछि । तखन स्मरण रहए जे नेपालक मल्ल राजालोकनि अपनाकेँ सगौरव कर्णाटकुलक वंशज मानैत छथि ।

मुस्लिम-आक्रमणसँ त्रस्त कर्णाट मैथिलसभमे सनातन धर्म-संस्कृतिक संरक्षण-सम्बर्द्धन करबाक उत्कट आकांक्षा रहनि । कहल जाइछ जे हरिसिंह देवक सङ्ग नेपाल आएल मैथिलसभ उपत्यकाक जनमानसमे सनातनी संस्कार जागृत करबाक लेल धार्मिक प्रवचन, अनुष्ठान आदिक शुभारम्भ कएलनि । एहि अनुष्ठानसभमे मैथिल ब्राह्मणसभक महत्वपूर्ण भूमिका रहैत छलनि । शिक्षाक प्रचार-प्रसारक सङ्गहि प्रशासनिक काजसभमे मैथिल कायस्थसभक सहभागिताकेँ महत्व देल जाए लागल । एकर अतिरिक्त मैथिलसभ अपनासङ्ग ढेरक ग्रन्थादि लऽ गेल छलाह । सङ्गहि विभिन्न विषयपर विद्वतापूर्ण ग्रन्थसभक रचना कऽ धार्मिक एवं राजनीतिक अभियानकेँ विशेष गति प्रदान कएलनि । नेपालक प्रसिद्ध इतिहासकार एवं पुरातत्वविद हरिराम जोशीक मत छनि– "कर्णाट मैथिलसभक एहि प्रकारक क्रियाकलापसँ ताहि समयमे हिन्दू जागरण भऽ राष्ट्रियताक समुन्नतिमे सहयोग प्राप्त भेल छलैक । पाछाँ श्री ५ पृथ्वीनारायण शाह सेहो एही हिन्दू जागरणक नाराद्वारा नेपाल एकीकरण-अभियानकेँ सफल बनौने छलाह । एहि तरहेँ राष्ट्रियताक सम्बर्द्धनमे कर्णाटसभक प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होइत अछि ।"

चौदहम शताब्दीसँ आइधरि अबाध रूपेँ नेपालमे राजदेवीक रूपमे पूजित तुलजा भवानी सिमरौनगढ़क राजकुलदेवी छलीह । उपत्यकामे हिनक पूजन-परम्परा कर्णाट मैथिलसभक प्रवेश पश्चात भेल । शाक्तमत आ तन्त्र सम्प्रदायक प्रचार मिथिलेसँ नेपालमे भेलैक । मातृका-पूजा, दीक्षा, दुर्गा-कालीक पूजा आदिक मूलमे एतुक्के प्रभाव छैक । नेवार समाजमे प्रचलित म्हपूजा अर्थात आत्मपूजा मिथिलेक सांस्कृतिक प्रभावसँ जुड़ल अछि । मध्यकालीन कलाकृति नेपालकेँ अन्तर्राष्ट्रिय जगतमे विशेष प्रतिष्ठा दिऔने छैक । तत्कालीन कलाकृति कतेको अंशमे मैथिल कलाकृतिक अनुकृति मात्र अछि ।

तत्कालीन नेपालक सङ्गीत आ नाटच-क्षेत्र सेहो मैथिल परम्परासँ प्रभावित रहल अछि । मैथिल सगीतज्ञलोकनिक साहचर्य आ शिक्षा नेपालक मल्ल राजालोकनिकेँ सङ्गीत-कलामे निपुण बनौने छल । सङ्गीत-कलाक महान पारखी राजा जगज्ज्योतिर्मल्ल सङ्गीतसार-संग्रह नामक प्रसिद्ध ग्रन्थक प्रणयण कएने छलाह । नेपालमे मिथिलाक परम्परागत वाद्यगीत नारदीपक प्रचार-प्रसार भेल छल । राजा हरिसिंह देवक सभा-पण्डित ज्योतिरीश्वर ठाकुरद्वारा रचित प्रहसन धूर्त्तसमागम नेपाल दरबारमे प्रदर्शित कएल गेल छल । एकरे प्रभावसँ मिथिलामे अभूतपूर्व सांस्कृतिक संस्थान कीर्तनियाक प्रादुर्भाव भेल, जकर प्रभाव नेपालमे सेहो पड़ल ।

सिमरौनगढ़ीय मैथिल संस्कार मध्यकालीन नेपालक राजनीति, धर्म, समाज तथा संस्कृतिकेँ परिष्कृत कऽ विशिष्ट स्वरूप प्रदान कएलक, जे पाछाँ चलिकऽ नेपालक

मौलिकताक पहिचान बनि गेल । सिमरौनगढ़क एहि योगदानक प्रति नेपालक राष्ट्रिय जीवन-पद्धति सदैव अनुगृहीत रहत । ई अनुग्रह मिथिला, मैथिल, मैथिलीकेँ अनन्त कालधरि गौरवक बोध करबैत रहत ।

मिथिलाक गौरवभूमि सिमरौनगढ़ इतिहास आ पुरातत्वक खुजल पुस्तक अछि । प्रयोजन छैक एकरा पढ़निहार आ सुरक्षा प्रदान कएनिहारक । ओना विभिन्न माध्यमसँ एहि दिशामे किछु काज अवश्य भेलैक अछि आ भइयोरहल अछि । मुदा अपेक्षित उत्साहक अभाव देखल जाइत अछि । मिथिलाक माटि-पानिसँ जुड़ल विभिन्न क्षेत्रक हस्तीसभ एहिदिस अगुआइ करथि से समय आ सुसंस्कारक माङ्ग अछि । जनककालीन इतिहासकेँ पुनर्जीवित करबामे योगदान देनिहार सिमरौनगढ़क सुरक्षा-कार्य मैथिलसभक लेल महायज्ञ थिक । महायज्ञमे सहभागी होएब सौभाग्यक बात होइत छैक । जगज्जननी जानकी हमरासभकेँ ई सौभाग्य प्रदान करथि ।

Copy right reserved no reproduction available without the written authorization of the writer.